RNI No. MPHIN/2004/14249

पोस्टल रजि.न.-मालवा डिविज़न/337/2017-19

मासिक

मूल्यः 25 /- रूपये

अक्षर वार्ता

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड शोध पत्रिका

Monthly International Referred Journal & Peer Reviewed

ISSN 2349 - 7521/ IMPACT FECTOR - 3.765

वर्ष-16 अंक-10 (अगस्त - 2020 भाग - 2)

Vol - XVI Issue No - X (August -2020 Part-II)

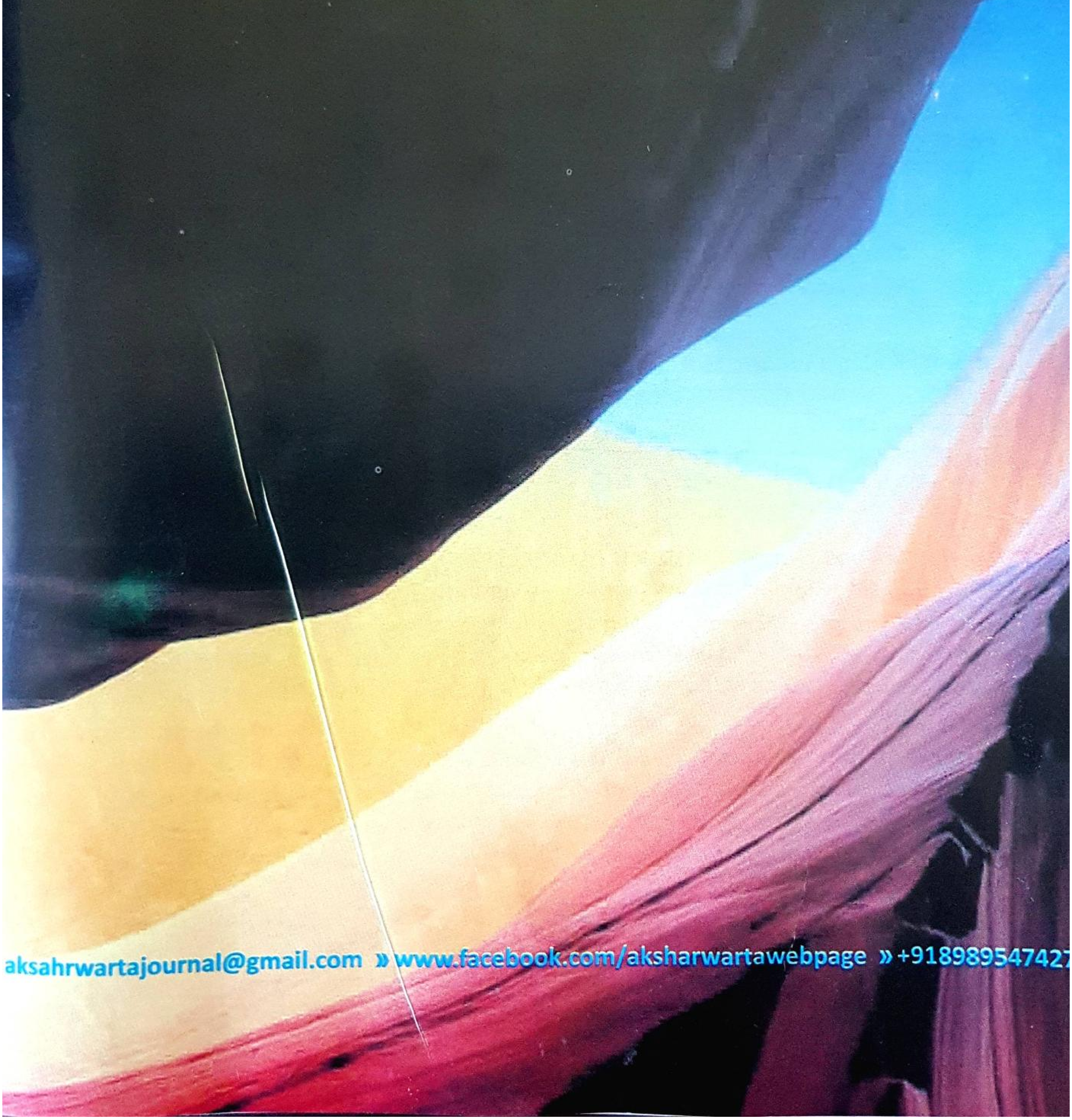

Scanned by TapScanner

मासिक

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

Impact Factor - 3.765

वर्ष-16 अंक-10,
अगस्त - 2020 (भाग-2)
Vol - XVI, Issue No. X
August 2020 (Part - 2)
aksharwartajournal@gmail.com

INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

प्रधान संपादक - प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा
संपादक- डॉ.मोहन बैरागी
संपादक मण्डल :-
डॉ.जगदीशचन्द्र शर्मा (उज्जैन)
प्रो.राजश्री शर्मा
डॉ. शशि रंजन 'अकेला' (आरजीपीवी,भोपाल)
सहयोगी सम्पादक :- डॉ. मोहसिन खान (महाराष्ट्र)
सह सम्पादक- डॉ.भेरुलाल मालवीय
डॉ. अंजली उपाध्याय
डॉ. पराक्रम सिंह
डॉ. रूपाली सारये
डॉ. विदुषी शर्मा
डॉ. ख्याति पुरोहित
डॉ. अविनाश कुमार अस्थाना

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। ०. हिन्दी माध्यम के शोध पत्रों को कृतिदेव 010 (Kruti Dev 010) या युनिकोड मंगल फोंट में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में भेजें। ०. अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (Times New Roman) ,एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें। ०. Please Follow- APA/MLA Style for formatting अक्षरवार्ता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रूपये 650/-रूपये एवं प्रकाशन/पंजीयन शुल्क रूपये 1500/- का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक विवरण निम्नानुसार है- बैंक :-

Corporation Bank,
Account Holder- Aksharwarta
Current Accont NO.
510101003522430
IFSC- CORP0000762,
Branch- Rishi Nagar,Ujjain,MP,India

भुगतान की मुल रसीद,शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालय के पते पर भेजना अनिवार्य है। Email: aksharwartajournal@gmail.com

संपादकीय कार्यालय का पता- संपादक अक्षर वार्ता
43,क्षीर सागर,द्रविड मार्ग,उज्जैन,मप्र. 456006,भारत
फोन :- 0734-2550150 मोबा :-8989547427

Subscription Form (Photocopy of this form may be used, if required)

I/ We wish to subscribe the Journals. Total Amount : 650/- (Six hundred Fifty only)(INR) and/or 1500/- Registration Fee. All fee and Subscriptions are payable in advance and all rates include postage and taxes. Subscribers are requested to send payment with their order whenever possible. Issues will be sent on receipt of payment. Subscriptions are entered on an annual basis and are subject to renewal in subsequent years.

Subscription from:..............to...............SUBSCRIBER TYPE:(Check One) Institution( )/Personal ()Date:.............Name/Institution and Address :...City : ....State :.........................PinCode............................... Country .... PhoneNo .:............. MobNo.:............................ Mail id...

PAYMENT OPTION:

DD in the favor of "AKSHARWARTA" payable at UJJAIN. DD No.: ....Dated : ....for Rupees (in words) ....Drawn on ....Any other option Specify :.........................

Scanned by TapScanner

अनुक्रम

» ओमप्रकाश वाल्मीकि के कथा संग्रह 'घुसपैठिये' में चित्रित दलित जीवन की समस्याएँ
डॉ. ममता सिंह 06

» बाज़ार के बवंडर में स्त्री
डॉ. अखिलेश गुप्ता 08

» मध्ययुगीन भक्ति - आन्दोलन : प्रयोजन तथा प्रभाव
रेखा कुमारी 10

» अमरकांत की कहानियों में भाषा और शिल्प का महत्व
अंजनीशरण गुप्ता 13

» विश्व में हिंदी की स्थिति (मॉरिशस के विशेष संदर्भ में)
सुशील कुमार 15

» निराला के काव्य में समाज दर्शन
विभीषण कुमार 17

» निराला के काव्य में मानवतावाद
डॉ. नीलम पाण्डेय 20

» भाषा, जाति एवं राष्ट्रीयता और डॉ. रामविलास शर्मा
डॉ. अनामिका कुमारी 24

» काशीनाथ सिंह और रेहन पर रग्घू में नवचेतना
प्रेरणा 26

» प्रेमचंद साहित्य : दलित और स्त्री अस्मिता का सवाल
डॉ. ओम प्रकाश 28

» वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजना : एक अनुशीलन
डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा 31

» बाल कोमलता और बदलता साहित्य
आरती पाल 34

» युगचेता कवि कबीर की सामाजिक चेतना
डॉ. नीलम पाण्डेय 38

» नवगीत की प्रवृतिगत विशेषताएँ
डॉ. अरूण कुमार 42

» समकालीन कविता के सरोकार
डॉ. रामचरण पांडेय 47

» 'दर्दपुर' : विस्थापन की त्रासदी और स्त्री
पूजा यादव 50

» उषा प्रियंवदा की कहानियों में पात्रों के सामान्य - असामान्य पक्ष
डॉ. रीता कुमारी 53

» विद्यापति के शिव और उनके विभिन्न रूप (विशेष संदर्भ हिंदी पदों में)
गायत्री कुमारी 56

» 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में नारी चेतना
अंशु कुमारी 59

» हंसकुमार तिवारी एवं उनका कथा - साहित्य
डॉ. श्वेत प्रकाश 61

» जैनेन्द्र के कथा - साहित्य की विशिष्टता
अमृता प्रीतम 64

» हिन्दी साहित्य में दलित आत्मकथाएँ - एक विश्लेषात्मक अध्ययन
डॉ. सूचिन्ता कुमारी 66

» राजनीतिक भ्रष्टाचार और हिन्दी काव्य
डॉ. सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह 68

» राजेश जोशी की कविता में पर्यावरणीय चेतना
पीयूष कुमार 71

» रेणु की आंचलिक भाषा
चन्द्रकान्त सिंह 74

» निमाड़ अंचल की जनजातीय संस्कृति एवं परम्परा
प्रमिला सेनानी
शोध निर्देशक - डॉ. मनजीत अरोरा 77

» भारतीय प्रवासी मजदूरों की मर्मलिपि - 'लाल पसीना'
डॉ. दयानिधि सा 79

» जैन साहित्यों में वर्णित आर्थिक जीवन
डॉ. राजेश नंदन 82

» स्वतंत्रता के पश्चात पंचायती राज एवं ग्राम सभा
डॉ. संजय कुमार मिश्र 85

» पंडित नेहरू की यादगार भूले
डॉ. रोहताश जमदग्नि 87

» राजनीतिक जनसंपर्क में सोशल मीडिया : एक अध्ययन
हरिओम कुमार 91

» अम्बेडकर की दृष्टि में लोक प्रशासन
डॉ. कुमार विपुल 94

» उच्च तथा निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन
ममता प्रजापत 96

» बदलती अर्थव्यवस्था की केंद्रीय भाषा
डॉ. राम बिनोद रे 99

» भारतीय धर्म दर्शन में ईश्वर विचार : अवधारणा एवं विकास
अर्जुन कुमार रमण 104

Scanned by TapScanner

» झारखण्ड के सदानों की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्थिति पर सरकारी योजनाओं का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (राँची नगर के संदर्भ में)
डॉ. गंगा केवट 106

» मौर्योत्तर कालीन भारतीय समाज में स्त्रियों की अवस्था (ई. पू. 185 से सन् 554 तक)
डॉ. नूतन कुमारी 108

» प्राचीन आर्य संस्कृति में स्त्रियों के अधिकार : एक विवेचन
संतोष कुमार सुमन 111

» भारतीय धर्म दर्शन के विभिन्न संप्रदायों में ईश्वर की अवधारणा एवं कर्मकाण्ड
डॉ. अर्जुन कुमार रमण 113

» महिलाओं में सौंदर्य प्रसाधन के प्रति आकर्षण
धनवंती कुमारी 115

» संस्कृत व्याकरण का महत्व
शशिरंजन कुमार
शोध निर्देशक - प्रो. (डॉ.) श्री प्रकाश राय 119

» नारी समस्या एवं चुनौतियों की अवधारणा
संगीता कुमारी 121

» अथर्ववेदीय यज्ञ विज्ञान की भारतीय संस्कृति के पोषण में महत्ता
वेणुधर दाश 121

» L'Identité des Femmes dans la Nouvelle de Premchand 'Une Veuve avec des Fils'
Dr. S. P. Singh 125

» Effectiveness of Smart Classes on Attitude of Secondary School Students
Fazal Iqbal &
Prof. (Dr.) Azizur Rahman Khan 128

» Marital Relationship and Its Changing Pattern In India During Globlization
Dhirendra Prasad 132

» During Pandamic Covid 19 Challanges Faced By Rural Women In Higher Education Programme
Urna Bhattacharjee 136

» Gender Difference In School Students' Test Anxiety
Dr. Sultana Perween 140

» Common Pregnancy Problems and Their Diagnosis
Dr. Ruby Kumari 143

Scanned by TapScanner

अक्षर वार्ता
ISSN 2349-7521
Vol - XVI, Issue - X, August - 2020 (Part- II)

"AKSHARWARTA"
Monthly International Referred Journal

बदलती अर्थव्यवस्था की केंद्रीय भाषा

डॉ. राम बिनोद रे

सहायक आचार्य, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड, तेजस्विनी हिल, पेरिया, केरल

प्रतीक और बिम्ब भाषा के सूत्रधार है। संसार का प्रत्येक साधन प्रतीक और बिम्ब द्वारा संचालित है। मनुष्य समुदाय में रहना पसंद करता है। समुदाय के लिए यह अभिव्यक्ति का साधन है। जो किसी देश और राष्ट्र की राष्ट्रीयता और उसकी आर्थिक संरचना को सुनियोजित करने में सहयोगी है। वस्तु का विनिमय, उत्पादन, बाजार का निर्माण, वस्तु का क्रय-विक्रय, मांग की लोच,मांग की पूर्तिऔर पूर्ति की लोच आदि व्यक्ति, समाज और समुदाय को ध्यान में रखकर किया जाता है। (The first kind of relation between Language and Economy is the most familiar one Linguistics Sign denotes object, the natural World and Economics skills and activities. They label person and groups and they refer to, and make prediction about the forces of Production and the coordination of efforts. Because sign refers to the external world' (Language and Political Economy, Judith T .Irvine,P-4) भाषा समाज की आत्मा है जैसे आत्मा के बिना व्यक्ति शरीर का कोई औचित्य नहीं है। हिन्दी और भारतीय भाषाएँ भारत के जन की आत्मा है। आजादी का उत्सव हम प्रतिवर्ष धूमधाम से मनाते हैं, वह आजादी हमें हिन्दी व् भारतीय भाषाओँ के द्वारा ही प्राप्त हुई है। 200 वर्ष पूर्व मानक हिन्दी एक बोली मात्र थी, बोली से होते हुए क्षेत्रीय विशेषताओं से ऊपर उठकर एकरूपता प्राप्त की और दूसरी भाषाओं और बोलियों के शब्द समूह, वाक्य-संरचना आदि से संबन्धित महत्वपूर्ण विशेषताओं को आत्मसात किया। यही स्थिति केरल की मलयालम की है; जो तमिल के साथ संस्कृत के मणिप्रवाल के साथ विकसित हुई और एक-नए आयाम को अभिव्यक्त करने की क्षमता को ग्रहण किया। भाषा को भाषा के रूप में नहीं, संस्कृति के रूप में परिभाषित की जानी चाहिए। आज हिन्दी और भारतीय भाषाओं में व्यापार, शिक्षा, प्रशासन, संचार,कानून-शास्त्र, विज्ञान, पत्रकारिता आदि सभी क्षेत्रों को अभिव्यक्त करने के लिए निजी शब्दभण्डार, प्रयुक्तियाँ और भाषिक-व्यवस्थायें हैं। इस व्यापक संप्रेषणीयता तथा सुग्राह्यता की जरूरत के कारण बड़ी शीघ्रता से एक मानकता का रूप उभरा है। मानकता के पीछे गहरे अर्थतंत्र की भूमिका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कार्य कर रही है, चूँकि आर्थिक रूप से मजबूत होने के बावजूद भारत तीसरी दुनिया में गिना जा रहा है।

किसी देश की भाषाई परिदृश्य:-

भाषाई व्यापार और अर्थव्यवस्था- आधुनिक भारतीय आर्यभाषा से पूर्व आर्यों के आगमन हो चुका था। उस समय वे संस्कृत बोला करते थे और यहाँ के मूल निवासियों के साथ युद्ध भी किया करते थे। वे अपने साम्राज्य की स्थापना के साथ-साथ, वे यहाँ के परिवारों के साथ घुल-मिल गए और संबंध

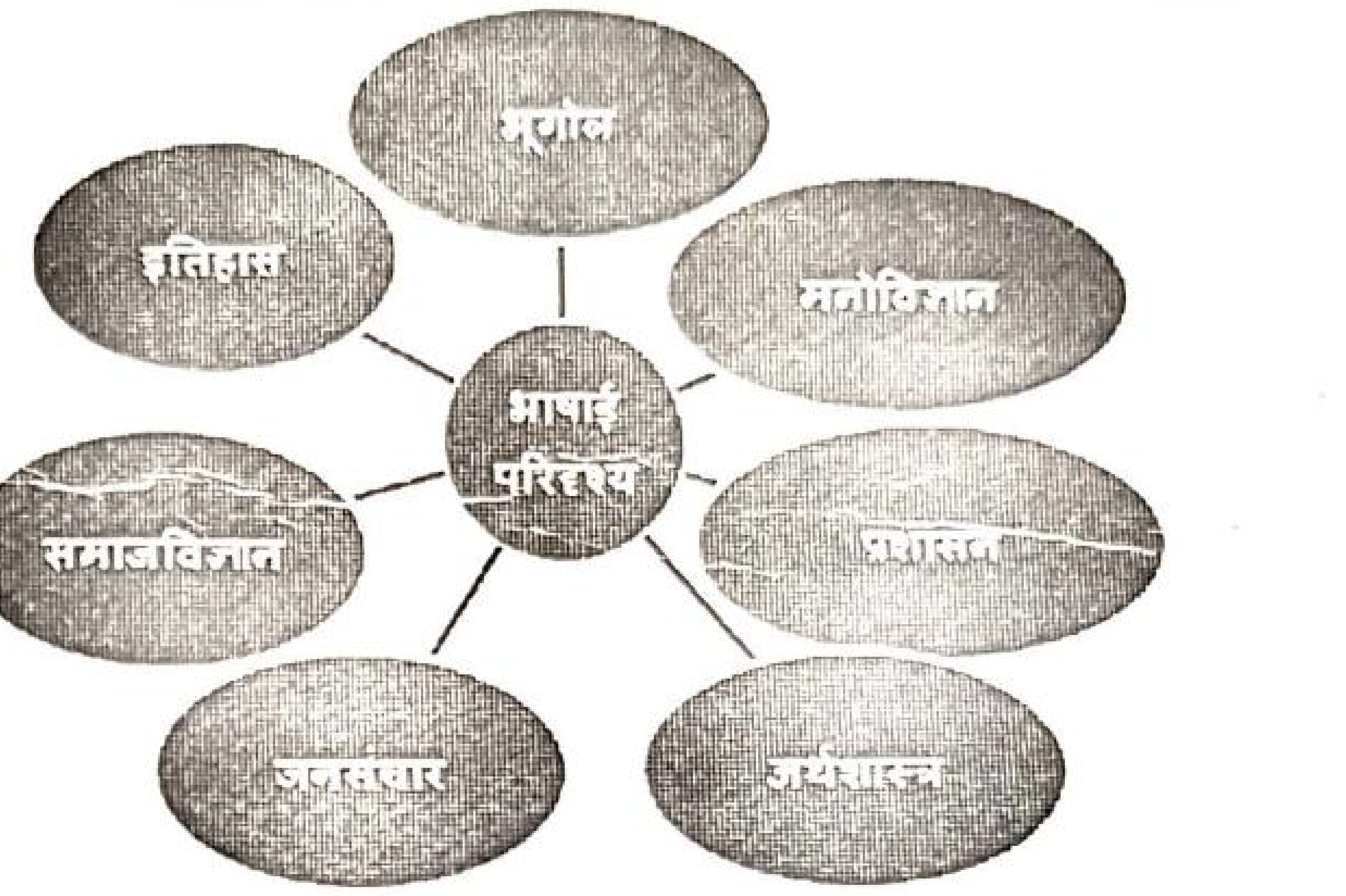

स्थापित करने लगे। इसपर इतिहासकार अर्जुनदेव लिखते हैं। 'भारत में आर्य लोग स्थाई रूप से सबसे पहले पंजाब में आकर बसे '(सभ्यता की कहानी, अर्जुनदेव, पृष्ठ-41) छठी शताब्दी तक ये बड़े-बड़े राज्यों में परिणत हो गए, जो बाद में चलकर सोलह महाजनपदों के रूप में परिणत हो गए। जब आर्य आए तब पूरा भारत खाली नहीं था; यहाँ जन लोग रहे होंगे, उनकीं भी अपनी भाषाएँ रही होंगी, जिसे हम जनबोली के रूप में जानते हैं। जिसकी पहचान हम उनकी संस्कृति, खान-पान, रीतिरिवाज आदि से लगा सकते हैं।

उस समय मगध, कोसल, कुरु, पांचाल, शूरसेन आदि जन थे। मगध के राजा बिम्बिसार और अजातशत्रु अपने राज्य का विस्तार करने हेतु संघर्षरत थे। पाटलीपुत्र राजधानी थी, जो आज पटना है। सिकंदर के द्वारा बाह्य आक्रमण के कारण छोटे राज्य कमजोर हो गए। चन्द्रगुप्त मौर्य ने इसका लाभ उठाकर वृहद् साम्राज्य की स्थापना की। इससे भारत की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में परिवर्तन आया। इसपर डॉ.अर्जुनदेव लिखते हैं- मौर्यकाल MAURYAN PERIOD (322 से 184 ई.पूर्व.) में भारतीय जनता के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जीवन में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। बौद्ध धर्म जिसका उदय पहले ही हो चुका था। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन से भाषाई परिवर्तन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है; इसके तीन प्रमुख कारण बाह्य और आन्तरिक द्वंदात्मक परिस्थितियों के कारण सामाजिक स्तर पर देख पातें हैं। पहला बाह्य आक्रमण और व्यावसायिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन, दूसरा धर्म का प्रचार-प्रसार, तीसरा अधिपत्य स्थापित करने हेतु विस्थापना। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज और भारतीय भाषाओं में परिवर्तन, विकास, गठन और नए मिश्रित भाषा का गठन हुआ। भाषा कोई वस्तु या पदार्थ नहीं जो एक दिन में परिवर्तन हो जाए। 12वी. से 15वी. शताब्दी तक गुलाम वंश और खिलजी वंश के शासन में मुस्लमान और हिन्दू दोनों ही एक-दुसरे की

Scanned by TapScanner

राजकमल प्रकाशन, 2018, पृष्ठ-244) उनका मुख्य उद्देश्य केवल लाभ कमाना था। वे संगठित और केन्द्रित होने के साथ-साथ भविष्य द्रष्टा भी थे। उस समय भारत की स्थिति सोचनीय थी। सभी राज्य छोटे-छोटे भागो मे बंटे थे और संगठित भी न थे। विविधताओ के साथ-साथ मलेरिया, प्लेग, डायरिया जैसे बिमारियो से भारत झुलस रहा था। ऊपर से विदेशी आक्रमणकारी लगातार आक्रमण किए जा रहे थे। वे अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के मध्य किसी भी स्थानीय संस्कृति से संघर्ष नही करना चाहते थे।

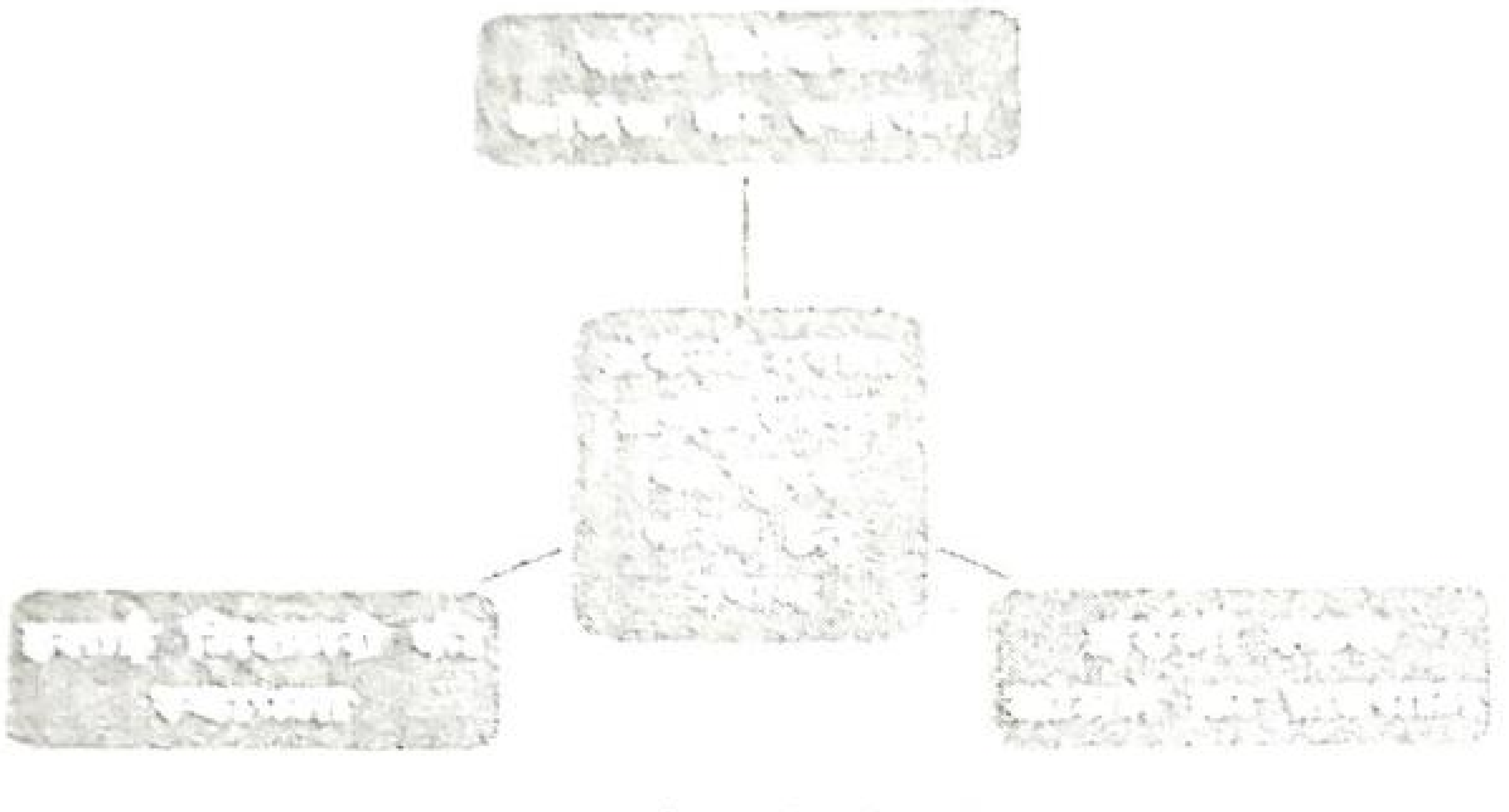

भारत मे आने के पश्चात उन्हे भारतीय संस्कृति, सभ्यता, ग्रन्थ और भाषा का प्रशिक्षण दिया जाता था। कुछ अपवाद को छोड़ दिया जाए तो उन्हें भारतीय संस्कृति से लगाव न था भारतीय अर्थव्यवस्था पर अपनी पकड बनाने की मनसा थी। 'हिन्दू जीवन-पद्धति से प्रभावित बंगाल आर्मी के मेजर जनंल चार्लस स्टुअर्ट के दिन की शुरुआत प्रत्येक सुबह पैदल जाकर कलकत्ता के समीपस्थ गंगा में स्नान के साथ होती थी, उन्हे प्रायः हिन्दू स्टुअर्ट कहा जाता था। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने सागर मे एक हिन्दू मंदिर बनवाया, बंगाली का प्रथम व्याकरण लिखनेवाले हैलहेड को देखकर उन्हे बंगाली होने का भ्रम हो सकता है।।(भारत मे विदेशी लोग और विदेशी भाषाएँ, श्रीश चौधरी, राजकमल प्रकाशन, 2018, पृष्ट -246)

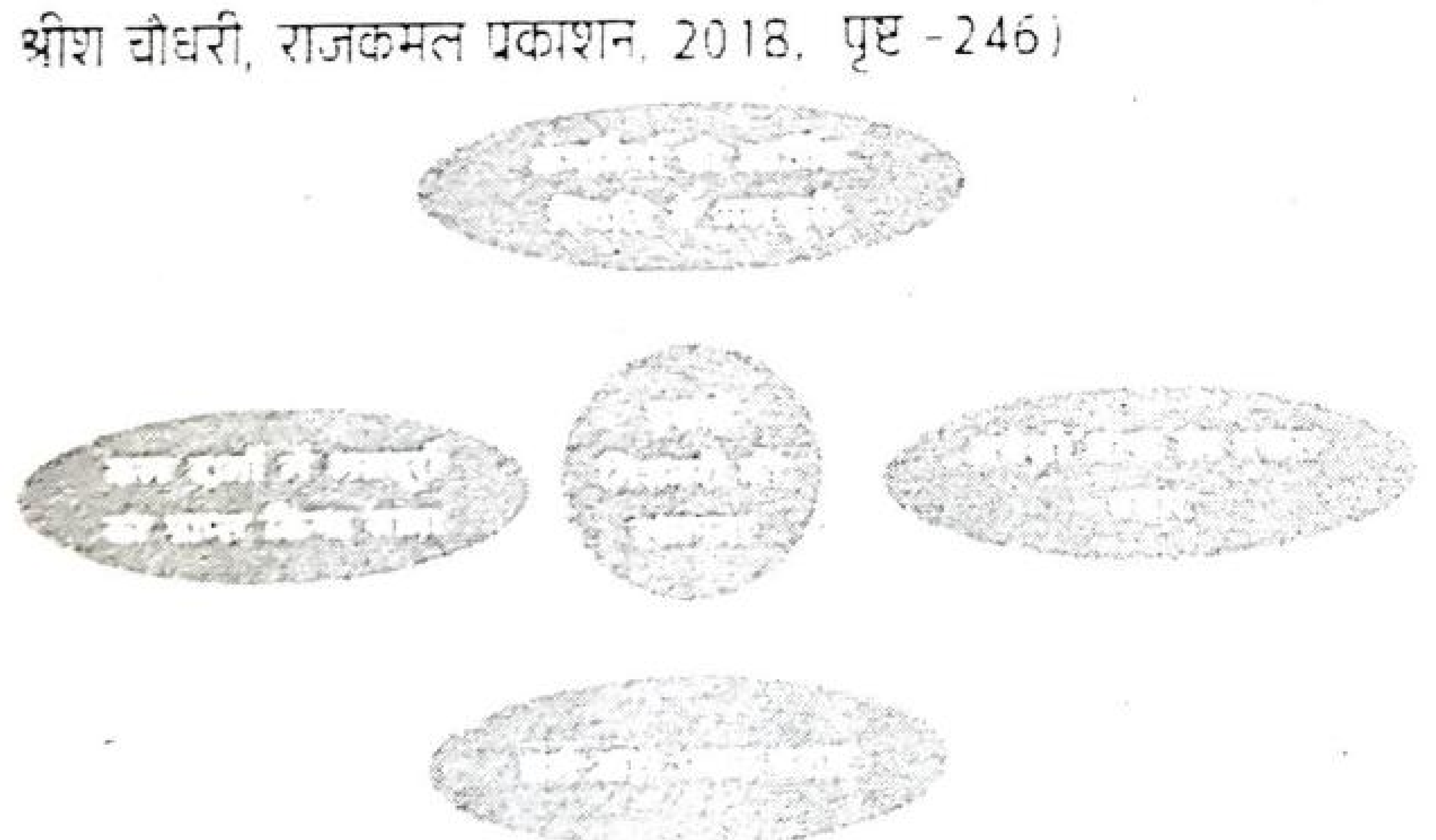

इसाई मिशनरी की स्थापनाः- अंग्रेजों के सामने सबसे बड़ी समस्या 'दरबारी भाषा फारसी' अनुवादक अपनी इच्छानुसार अनुवाद कर वायसराय के सामने एक संदेह उत्पन्न कर सकता है। जेम्स द्वारा जहाँगीर के पत्र पर 25 जनवरी 1615 में अपने पत्र में लिखते है। 'एक अन्य भीषण समस्या जो मै झेल रहा हूँ- मुझे एक अनुवादक की आवश्यकता है। क्योंकि यहाँ के बिचौलिए अपनी इच्छानुसार कुछ भी बोलते हैं। वे राजा के पत्र में भी हेर-फेर कर देते है। क्योंकि वे चाहते है कि उनके राजा का नाम हमारे राजा के पहले हो , जिसकी इजाजत मै नहीं दे सकता' (भारत मे विदेशी लोग और विदेशी भाषाएँ, श्रीश चौधरी, राजकमल प्रकाशन, 2018, पृष्ट-248) 1617 ई. में विलियम निकोलस का मानना था कि अगर अनुवादक पर निर्भर रहे तो अंग्रेजी गड़बड़ हो जाएगी। राजकीय कार्यो के लिए दुभाषियों को एकत्र किया गया; जो क्षेत्रीय बोलियों से सम्बद्ध थे। इस समय कंपनी के कर्मचारियो को हिन्दुस्तानी और फारसी सिखाने के लिए प्रेरित किया, शिक्षक रखे गए। भाषा सीखने पर 200 रुपये और पदोउन्नति दी जाने लगी। अंग्रेज जान चुके थे कि स्थानीय भाषा सीख बगैर आर्थिक और प्रशासनिक कार्य का संचालन नही किया जा सकता।

फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापनाः- 1801 मे फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की गई, आरम्भ मे प्राचीन और भारतीय भाषाओं को सिखाने की होड़ शुरू हुई, जिसके लिए बंगाल रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ने अहम भूमिका निभाई। '1839 में अंग्रेजी जाननेवाले देशजों को आधिकारिक नियुक्तियों में तरजीह देने की घोषणा की गई, बाद मे ईस्ट इंडिया कंपनी फारसी के प्रयोग की अनुमति के पीछे एक कारण था'(भारत मे विदेशी लोग और विदेशी भाषाएँ, श्रीश चौधरी, राजकमल प्रकाशन, 2018, पृष्ठ-256) 19वी. शताब्दी के आरम्भ तक हिन्दुस्तानी / उर्दू का प्रयोग सामान्य जन मे किया जाने लगा.फारसी केवल मुट्ठीभर लोगों द्वारा किया जाने लगा। 1825 तक फारसी को हटाने के लिए आन्दोलन चल पड़ा। अंग्रेजो द्वारा अत्याचार शुरू हो गया। संसाधनों का दोहन शुरु हो गया। अब व्यापारिक लाभ के साथ-साथ भारत में प्रशासनिक आधिपत्य के लिए अपने अनुरूप नियमावली बनाने लग गए। हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी भाषा ने काफी परेशान करना शुरू कर दिया 1857 का विद्रोह मे यह स्पष्ट परिलक्षित है। जनता आन्तरिक द्वंदो से जूझ रहा था वहीं अंग्रेज विश्व स्तर पर युद्ध की समस्या से सामना कर रहा था ऐसी स्थिति में वे भारतीयो को न केवल सैन्य के रूप मे प्रयोग किया, बल्कि भारतीय संपत्तियो का दोहन कर युद्ध मे इस्तेमाल करने का प्रयास किया।।1830 के आसपास लोगों का ध्यान अंग्रेज और अंग्रेजियत की ओर होने लगा, चूँकि अंग्रेजी राजकीय भाषा न होने के बावजूद इसकी महत्ता थी, जिसे अस्वीकार नही किया जा सकता- 1783 मे ईस्ट इंडिया कम्पनी के सर्वोच्च न्यायालय में फारसी हटाने तथा अंग्रेजी के अपनाने के बाद 18वी. सदी के अंत तक भविष्य की कार्य-कारिणी भाषा के बारे में कोई संदेह नही रह गया था। तथापि ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासनकाल मे भी फारसी लोकप्रशासन की भाषा बनी रही। परन्तु बडी तादाद मे हिन्दू और मुस्लिमों मे भी अनेक पहले ही फारसी छोड़ अंग्रेजी की ओर रुख कर चुके थे। फारसी अब प्रायः कुलीन वर्ग तक ही सीमित थी 'जो मुगल प्रशासन में रोजगार पाने के लिए फारसी सीख रहे थे, वे भी अंग्रेजी की ओर रुख कर चुके थे।' (भारत मे विदेशी लोग और विदेशी भाषाएँ, श्रीश चौधरी, राजकमल प्रकाशन, 2018, पृष्ठ-131)

जैसे-जैसे समाज विकसित होता है; वैसे-वैसे भाषा भी समानांतर विकसित होती है। यह पता लगाना बहुत मुश्किल है कि भाषा की

Scanned by TapScanner

मे व्यापार करता है, उस व्यापारी को वस्तु मूल्य, क्रय-विक्रय और ग्राहकों की संख्या में बढ़ोतरी हेतु समभाषा ज्ञान होना जरूरी है ताकि ग्राहकों से भली-भांति संपर्क कर सकता है।

वैश्वीकरण के इस दौर मे सम्पूर्ण विश्व एक बाजार के रूप मे सामने आया है और उसविश्व बाजार मे भारत का विशेष स्थान है। आज भारत देश दुनिया की तेजी से उभरती हुई आर्थिक शक्तियो मे गिना जा रहा है। भारत का उपभोक्ता वर्ग विश्व और बहुराष्ट्रीय कंपनियो को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। बाजार मे निवेश और व्यापार के लिए भाषा का सीखना अत्यंत आवश्यक है, तभी निवेशक अपने वस्तु को जन-जन तक पहुँचा सकता है। टी. वी. मे प्रसारित होनेवाले हिन्दी के विज्ञापन इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। आज भारत पूरे विश्व मे अनेक वस्तुओ का निर्यात कर रहा है। भारत और उसके विरोधभासनामक पुस्तक में लिखा गया है 'एशिया तथा अफ्रीका के कई देशो के साथ भारत ने भी उपनिवेशवाद को एक बाधा के रूप में देखा जापान अपने खोल में घुस गया और उसने खुद को दुर्भाग्य से बचा लिया उपनिवेशवाद भारत, चीन, मलेशिया, इंडोनेशिया तथा अन्य देश जिस तरह व्यापार के जरिये अपना पैर जमाया,उसे जापान ने अपने यहाँ इस तरह नही घुसने दिया'(भारत और उसके विरोधाभास पृष्ट-52) बाजार और खनिज ससाधनों के साथ-साथ मानवीय ससाधनों के तौर पर विश्व मे भारत की अपनी एक अलग पहचान बनी है। लोकतान्त्रिक देश होने के नाते आजादी के बाद भारत का एक सपना था। भारत अपने खनिज ससाधनो की सहायता से उत्पादन करेगा और विश्व बाजार मे अपना मॉल विक्रय कर लाभ कमाएगा और उस लाभ से सामाजिक कार्य किया जाएगा। पर यह केवल एक सपना मात्र रह गया। जहाँ भारत एक ओर क्रेता (consumer) तैयार कर रहा है तो दूसरी ओर भारतीय ससाधनों का दोहन कर विदेशी कपनियों (Multi-National Company) को फायदा पहुँचा रहा है। वर्तमान समय मे भारत का सकल घरेलू उत्पाद(Gross Domestic Product) 4.5 प्रतिशत 2019 मे है जो 2018 में 7 प्रतिशत था। पिछले छ.वर्षो में सबसे कम है। जबकि तमिलनाडु राज्य मे बेरोजगारी की सख्या 1.1 प्रतिशत है । यहाँ की क्षेत्रीय भाषा तमिल है जो संस्कृत से भी पुरानी है। ये सदेव अपनी भाषा के लिए संघर्षरत रहते है। चूँकि भाषा संस्कृति का प्रमुख अंग है,सस्कृति उत्पादन के परिमाप को तय करती है, भाषा उस परिमाप के प्रतीक और चिन्हों को निर्धारित करने में अपनी अहम् भूमिका अदा करसकती है।

सन्दर्भ सूची:-

1. भारत और उसके विरोधाभास,ज्यां द्रेज और अमर्तय सेन,अनु-अशोक कुमार राजकमल प्रकाशन,2019
2. भारत का इतिहास, रोमिला थापर, राजकमल प्रकाशन, 1975
3. सभ्यता की कहानी, अर्जुन देव, एन.सी.आर.टी., 13वी. संस्करण, 1992
4. हिदी भाषा : इतिहास और स्वरूप, राजमणि शर्मा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, दूसरा संस्करण,1998
5. महावीरप्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण :डॉ.रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, 2018
6. विश्व भाषा हिदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी,प्रभात प्रकाशन,दिल्ली,2003
7. भारत में विदेशी लोग और विदेशी भाषाएँ, श्रीश चौधरी,राजकमल प्रकाशन, 2018
8. भाषा और समाज, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली,2002
9. Language and Globalization, edited by Nikolas Coupland, Wiley-Blackwell, 2010
10. Language and Political Economy, Judith T.Irvine,1989

Scanned by TapScanner